ग़ज़ल

मीर तक़ी मीर

(1722-1810)

रंज खींचे थे दाग़ खाए थे
दिल ने सदमे बड़े उठाए थे

पास-ए-नामूस-ए-इश्क़ था वर्ना
कितने आँसू पलक तक आए थे

वही समझा न वर्ना हम ने तो
ज़ख़्म छाती के सब दिखाए थे

अब जहाँ आफ़्ताब में हम हैं
याँ कभू सर्व ओ गुल के साए थे

कुछ न समझे कि तुझ से यारों ने
किस तवक़्क़ो पे दिल लगाए थे

फ़ुर्सत-ए-ज़िंदगी से मत पूछो
साँस भी हम न लेने पाए थे

'मीर' साहब रुला गए सब को
कल वे तशरीफ़ याँ भी लाए थे

बहर (Behr) का नाम :

बहरे ख़फ़ीफ़ मुसद्दस सालिम ,मख़्बून,
मख़्बून महज़ूफ मुसक्कन

अरकान

(वो शब्द जिस से शेर की तक़्ती करते हैं) :

फ़ाइलातुन , मफ़ाइलुन , फ़ालुन
2122 1212 22

रदीफ़ : थे

क़ाफ़िया / कवाफ़ी :

खाये , उठाये, आये , दिखाए
साये , लगाए , पाए , लाये

- ओबैद आज़म आज़मी
www.azmi.in
09/10/2018